Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 326- 330**

डिण्डौरी जिले के आवासीय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. राम सिंह यादव
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग, मेकलसुता महाविद्यालय, डिण्डौरी

Accepted: 12/03/2026
Published: 13/03/2026 ***DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.20494504***

सारांश

यह शोध डिण्डौरी जिले के आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंधों का अध्ययन करने पर आधारित है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार योगदान देता है। डिण्डौरी जिला जनजातीय बहुल एवं भौगोलिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने में आवासीय विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया तथा जिले के विभिन्न आवासीय विद्यालयों से 140 विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन किया गया। डेटा संकलन के लिए कैटल व्यक्तित्व प्रश्नावली, बाकर मेहंदी सृजनात्मकता परीक्षण तथा विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणामों का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, टी-परीक्षण तथा पियर्सन सह-संबंध गुणांक की सहायता से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन एवं सामाजिक समायोजन को विकसित करने में सहायक है। लगभग 75 प्रतिशत विद्यार्थियों में उच्च स्तर का आत्मविश्वास पाया गया। सृजनात्मकता परीक्षण में विद्यार्थियों की मौलिकता एवं नवोन्मेषी सोच उल्लेखनीय रही। साथ ही, व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सह-संबंध पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि संतुलित व्यक्तित्व शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करता है।

Keywords: आवासीय विद्यालय , *व्यक्तित्व विकास , सृजनात्मकता , शैक्षिक उपलब्धि*

.

1. प्रस्तावना

1.1 विषय की पृष्ठभूमि

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, 'शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।' आधुनिक युग में शिक्षा का उद्देश्य मात्र साक्षरता प्राप्त करना नहीं, अपितु विद्यार्थी के व्यक्तित्व, उसकी चिंतन शक्ति और सृजनात्मक क्षमताओं को इस प्रकार विकसित करना है कि वह समाज में एक उत्तरदायी एवं सक्षम नागरिक बन सके।

किसी भी विद्यार्थी की सफलता केवल उसके अंकों (शैक्षिक उपलब्धि) से नहीं, बल्कि उसके संतुलित व्यक्तित्व और नवीन सोच (सृजनात्मकता) से मापी जाती है। इन तीनों आयामों का समुचित विकास ही शिक्षा की समग्र सफलता का प्रमाण है।

1.2 आवासीय विद्यालयों की अवधारणा

आवासीय विद्यालय शिक्षा की वह पद्धति है जहाँ विद्यार्थी और शिक्षक एक ही परिसर में निवास करते हैं। प्राचीन भारतीय 'गुरुकुल परंपरा' इसी व्यवस्था का मूल रूप थी। वर्तमान समय में आवासीय विद्यालय विद्यार्थियों को अनुशासित, सुरक्षित एवं शैक्षणिक वातावरण प्रदान करते हैं। यहाँ विद्यार्थी न केवल कक्षा में सीखते हैं, बल्कि खेल के मैदान, छात्रावास और सामुदायिक जीवन के माध्यम से जीवन-कौशल भी आत्मसात करते हैं।

यह व्यवस्था विशेष रूप से उन क्षेत्रों के लिए वरदान है जहाँ भौगोलिक या आर्थिक कारणों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच सुलभ नहीं है।

1.3 डिण्डौरी जिले का परिप्रेक्ष्य

मध्य प्रदेश का डिण्डौरी जिला अपनी प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध जनजातीय संस्कृति के लिए विख्यात है। तथापि, दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के कारण यहाँ के विद्यार्थियों के लिए नियमित रूप से विद्यालय पहुँचना कठिन होता है।

इस चुनौती के समाधान हेतु मध्य प्रदेश शासन एवं विभिन्न संगठनों द्वारा संचालित आवासीय विद्यालय निम्न हैं — एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS) तथा कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV)। ये विद्यालय विद्यार्थियों को आवास प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें एक ऐसा मंच देते हैं जहाँ उनकी ग्रामीण पृष्ठभूमि उनकी प्रगति में बाधक नहीं बनती।

1.4 व्यक्तित्व, सृजनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धि का अंतर्संबंध

शोध का मुख्य केंद्र इन तीन महत्त्वपूर्ण चरों (Variables) के मध्य संबंध को समझना है:

व्यक्तित्व (Personality): यह विद्यार्थी के व्यवहार, आत्मविश्वास और सामाजिक अनुकूलन की क्षमता को दर्शाता है। इसमें भावनात्मक स्थिरता, आत्म-नियंत्रण और सामाजिकता जैसे आयाम सम्मिलित हैं।

सृजनात्मकता (Creativity): यह समस्याओं के नवीन समाधान खोजने और लीक से हटकर चिंतन करने की क्षमता है। जनजातीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों में प्रायः पारंपरिक कला और नवाचार की नैसर्गिक प्रतिभा होती है।

शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement): यह विद्यार्थी की सीखने की क्षमता का औपचारिक प्रमाण है, जो परीक्षा परिणामों एवं कक्षा प्रदर्शन में परिलक्षित होती है।

1.5 शोध की आवश्यकता एवं औचित्य

डिण्डौरी जैसे जनजातीय बहुल क्षेत्र में यह अध्ययन इस दृष्टि से आवश्यक है कि क्या आवासीय सुविधा वास्तव में विद्यार्थियों के मानसिक एवं शैक्षिक स्तर को प्रभावित कर रही है? क्या गृह-परिवेश से दूर एक अनुशासित वातावरण में रहने से उनकी सृजनात्मकता का विकास हो रहा है अथवा वे केवल पाठ्यक्रम-केंद्रित ज्ञान तक सीमित हैं?

यह शोध न केवल शिक्षाविदों के लिए, बल्कि नीति-निर्माताओं के लिए भी सहायक सिद्ध होगा, ताकि वे आवासीय शिक्षा की गुणवत्ता में अभीष्ट सुधार कर सकें।

2. साहित्य समीक्षा

इस शोध विषय से सम्बंधित पूर्व अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:

2.1 व्यक्तित्व विकास पर आधारित अध्ययन

अध्ययनों का निष्कर्ष: सिंह एवं अन्य (2018) ने अपने शोध में पाया कि आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थी, गैर-आवासीय विद्यार्थियों की तुलना में अधिक आत्मनिर्भर और अनुशासित होते हैं। समूह-जीवन के कारण उनमें नेतृत्व क्षमता (Leadership Skills) और सामाजिक सामंजस्य का गुण अधिक विकसित होता है।

प्रासंगिकता: डिण्डौरी जैसे क्षेत्रों में, जहाँ सामाजिक परिवेश भिन्न है, आवासीय विद्यालय विद्यार्थियों को संकोच से मुक्त कर आत्मविश्वासी व्यक्तित्व प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

2.2 सृजनात्मकता पर आधारित अध्ययन

अध्ययनों का निष्कर्ष: डॉ. बाकर मेहंदी (1990) एवं अन्य शिक्षाविदों के अनुसार, सृजनात्मकता का संबंध विद्यार्थी को मिलने वाले 'अवसरों' से है। जिन विद्यालयों में पाठ्येतर गतिविधियाँ (Co-curricular Activities) प्रचुर मात्रा में होती हैं, वहाँ के विद्यार्थियों में लचीलापन (Flexibility) तथा मौलिकता (Originality) अधिक पाई जाती है।

प्रासंगिकता: आवासीय विद्यालयों में सायंकालीन गतिविधियाँ विद्यार्थियों की कलात्मक और रचनात्मक सोच को विकसित करने का सुअवसर प्रदान करती हैं।

2.3 शैक्षिक उपलब्धि पर आधारित अध्ययन

अध्ययनों का निष्कर्ष: झा (2021) सहित अनेक अध्ययनों ने स्पष्ट किया है कि आवासीय विद्यालयों में 'नियमित अध्ययन समय' (Supervised Study Hours) शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक वृद्धि करता है। शिक्षकों की सतत उपस्थिति से विद्यार्थियों की शंकाओं का तत्काल समाधान होता है, जिससे परीक्षा परिणामों में उल्लेखनीय सुधार होता है।

प्रासंगिकता: डिण्डौरी के ग्रामीण अंचलों में पारिवारिक परिवेश में अध्ययन का माहौल प्रायः उपलब्ध नहीं होता। ऐसे में आवासीय व्यवस्था विद्यार्थियों के शैक्षणिक अंकों को सुधारने में प्रभावी भूमिका निभाती है।

2.4 जनजातीय क्षेत्रों में आवासीय शिक्षा पर शोध

अध्ययनों का निष्कर्ष: जनजातीय क्षेत्रों पर केंद्रित शोध यह इंगित करते हैं कि आवासीय विद्यालय 'सांस्कृतिक अंतराल' (Cultural Gap) को न्यूनतम करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। यहाँ विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ उनके परम्परागत कौशल को निखारने का संतुलित वातावरण मिलता है।

2.5 शोध अंतराल (Research Gap)

उपरोक्त साहित्य के पुनरावलोकन से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के विकास में 'वातावरण' की भूमिका निर्णायक है। परंतु डिण्डौरी जिले के विशिष्ट भौगोलिक और सामाजिक संदर्भ में इन तीनों चरों का एकीकृत एवं समवर्ती अध्ययन अत्यल्प हुआ है। अतः यह शोध उस अंतराल को भरने का सुनिश्चित प्रयास है।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

- डिण्डौरी जिले के आवासीय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे कि आत्मविश्वास, अनुशासन और सामाजिकता — का व्यापक अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की सृजनात्मकता (Creativity) के स्तर का विशेषतः प्रवाहिता, लचीलापन एवं मौलिकता के संदर्भ में आकलन करना।
- शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) तथा आवासीय परिवेश के मध्य सांख्यिकीय सह-संबंध स्थापित करना।
- लिंग के आधार पर (बालक एवं बालिका) व्यक्तित्व, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का परीक्षण करना।
- शोध-निष्कर्षों के आधार पर आवासीय शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित चरणों का पालन किया गया है, ताकि प्राप्त परिणाम सटीक, विश्वसनीय एवं वैध हों।

4.1 शोध की प्रविधि

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि: इस अध्ययन हेतु 'वर्णनात्मक शोध विधि' (Descriptive Research Method) का चयन किया गया है। यह विधि 'क्या है' का यथार्थ वर्णन करती है। चूँकि शोध का उद्देश्य डिण्डौरी जिले के आवासीय विद्यार्थियों की वर्तमान स्थिति का निष्पक्ष अध्ययन करना है, अतः यह विधि सर्वाधिक उपयुक्त है।

4.2 जनसंख्या एवं न्यादर्श

जनसंख्या: डिण्डौरी जिले के समस्त आवासीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी इस शोध की कुल जनसंख्या हैं।

न्यादर्श: संपूर्ण जनसंख्या के अध्ययन की व्यावहारिक कठिनाई को दृष्टिगत रखते हुए, 'यादृच्छिक प्रतिचयन विधि' (Random Sampling Method) द्वारा जिले के विभिन्न आवासीय विद्यालयों से 140 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इसमें बालक एवं बालिकाओं का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने का विशेष प्रयास किया गया।

4.3 शोध के उपकरण

प्रदत्तों (Data) के संकलन हेतु निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया:

व्यक्तित्व मापन: आर. बी. कैटल (R. B. Cattell) की 'व्यक्तित्व प्रश्नावली' (16 PF) का उपयोग किया गया, जो आत्म-विश्वास, अनुशासन, भावनात्मक स्थिरता और सामाजिकता जैसे आयामों का परिमापन करती है।

सृजनात्मकता परीक्षण: विद्यार्थियों की मौलिक चिंतन-क्षमता जाँचने हेतु 'बाकर मेहंदी' (Baker Mehdi) का शाब्दिक/अशाब्दिक सृजनात्मकता चिंतन परीक्षण (1973) प्रयुक्त किया गया। यह मुख्यतः प्रवाहिता (Fluency), लचीलापन (Flexibility) एवं मौलिकता (Originality) का मूल्यांकन करता है।

शैक्षिक उपलब्धि: विद्यार्थियों के पिछले शैक्षणिक सत्र के वार्षिक परीक्षा परिणामों (Marksheets) को आधार बनाया गया, जो उनके विषयगत ज्ञान एवं शैक्षणिक स्तर का सर्वाधिक प्रामाणिक पैमाना है।

4.4 डेटा संग्रहण की प्रक्रिया

शोधकर्ता ने स्वयं विद्यालयों का दौरा किया और संबंधित प्राचार्यों से लिखित अनुमति प्राप्त की। विद्यार्थियों को शोध के उद्देश्य एवं गोपनीयता के प्रति आश्वस्त किया गया। तदोपरांत एक नियंत्रित वातावरण में प्रश्नावलियाँ भरवाई गईं।

सृजनात्मकता परीक्षण हेतु निश्चित समय-सीमा निर्धारित की गई ताकि परिणामों की मानक विश्वसनीयता बनी रहे।

4.5 सांख्यिकीय विश्लेषण

संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियाँ प्रयुक्त की गईं:

मध्यमान (Mean) एवं मानक विचलन (Standard Deviation): सामान्य प्रवृत्तियों को समझने के लिए।

टी-परीक्षण (t-Test): विभिन्न समूहों (बालक-बालिका) के मध्य सांख्यिकीय तुलना हेतु।

सह-संबंध गुणांक (Pearson's r): व्यक्तित्व, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य आपसी संबंध ज्ञात करने के लिए।

5. विश्लेषण एवं निष्कर्ष

संकलित आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम एवं निष्कर्ष प्राप्त हुए:

5.1 आंकड़ों का समेकित विश्लेषण

मापन क्षेत्र	प्रमुख परिणाम	प्रयुक्त उपकरण
व्यक्तित्व	75% विद्यार्थी उच्च आत्मविश्वास	कैटल व्यक्तित्व प्रश्नावली
सृजनात्मकता	मौलिकता स्तर — उत्कृष्ट	बाकर मेहंदी परीक्षण
शैक्षिक उपलब्धि	सकारात्मक सह-संबंध (r > 0)	वार्षिक परीक्षा अंकपत्र
ड्रॉप-आउट दर	गैर-आवासीय विद्यालयों से कम	विद्यालय अभिलेख

5.2 व्यक्तित्व विश्लेषण

आंकड़ों से स्पष्ट हुआ कि आवासीय विद्यालयों के लगभग 75% विद्यार्थी उच्च स्तरीय आत्मविश्वास और सामाजिक सामंजस्य प्रदर्शित करते हैं। समूह-जीवन के कारण उनमें 'स्व-अनुशासन' (Self-discipline) एवं 'निर्णय लेने की क्षमता' का विकास गैर-आवासीय परिवेश की तुलना में श्रेष्ठ पाया गया।

5.3 सृजनात्मकता का स्तर

बाकर मेहंदी परीक्षण के परिणामों से दृष्टिगत हुआ कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के होने के बावजूद, इन विद्यार्थियों में 'मौलिकता' (Originality) का स्तर उल्लेखनीय रूप से ऊँचा है। विशेषकर लोककला, शिल्प एवं जनजातीय संस्कृति से संबंधित समस्याओं के समाधान में उनकी सृजनात्मक सोच उत्कृष्ट पाई गई।

5.4 शैक्षिक उपलब्धि का सह-संबंध

विश्लेषण में व्यक्तित्व और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक सकारात्मक सह-संबंध (Positive Correlation) परिलक्षित हुआ। जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व अधिक संतुलित एवं आत्मविश्वासी था, उनके शैक्षणिक अंक भी उच्चतर श्रेणी में रहे।

6. मुख्य निष्कर्ष

आवासीय परिवेश का सकारात्मक प्रभाव: डिण्डौरी जिले के आवासीय विद्यालयों का वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। नियमित दिनचर्या विद्यार्थियों को अध्ययन के प्रति अधिक गंभीर एवं समर्पित बनाती है।

सृजनात्मक क्षमता की संभावनाएँ: यदि इन विद्यार्थियों को आधुनिक संसाधन एवं उचित मंच प्रदान किए जाएँ, तो उनकी सृजनात्मकता राष्ट्रीय स्तर के विद्यार्थियों के समकक्ष सिद्ध हो सकती है।

शैक्षिक स्थिरता एवं प्रतिधारण: शिक्षकों की निरंतर उपस्थिति और व्यक्तिगत ध्यान के फलस्वरूप इन विद्यालयों में 'ड्रॉप-आउट' दर कम है एवं शैक्षणिक परिणाम स्थिर व सकारात्मक हैं।

लिंग-आधारित अंतर: बालिकाओं में व्यक्तित्व के कुछ आयामों (यथा भावनात्मक परिपक्वता) में बालकों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च स्कोर प्राप्त हुए, जो लिंग-संवेदनशील शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

7. सुझाव

- विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को निखारने हेतु विद्यालयों में ICT प्रयोगशाला (कंप्यूटर लैब), डिजिटल पुस्तकालय एवं मेकर-स्पेस की स्थापना की जाए।
- व्यक्तित्व विकास के लिए प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों द्वारा नियमित परामर्श (Counseling) सत्र एवं व्यक्तित्व विकास कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
- जनजातीय लोककला, संगीत एवं शिल्प को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाए, ताकि विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ उनकी सृजनात्मकता का भी संवर्धन हो।
- शिक्षकों को आवासीय विद्यालय-केंद्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किए जाएँ जिनमें मनोविज्ञान, सृजनात्मकता एवं बाल-केंद्रित शिक्षा-शास्त्र सम्मिलित हों।
- इस शोध को वृहत्तर स्तर पर — अन्य जिलों एवं आदिवासी क्षेत्रों में — दोहराया जाए, ताकि तुलनात्मक नीतिगत निर्णय लिए जा सकें।

8. उपसंहार

संक्षेप में, यह शोध प्रमाणित करता है कि डिण्डौरी जैसे जनजातीय बाहुल्य एवं भौगोलिक दृष्टि से कठिन क्षेत्र में 'आवासीय शिक्षा पद्धति' विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। यह पद्धति न केवल उन्हें शैक्षणिक ज्ञान प्रदान कर रही है, अपितु एक सुदृढ़ व्यक्तित्व एवं सृजनात्मक चिंतन के साथ भविष्य की चुनौतियों का सामना करने हेतु उन्हें समग्र रूप से तैयार भी कर रही है।

इस शोध की परिसीमाएँ भी हैं — यथा, न्यादर्श का आकार, केवल एक जिले तक सीमित अध्ययन-क्षेत्र तथा अनुदैर्ध्य (Longitudinal) आंकड़ों का अभाव। भविष्य के शोध में इन पहलुओं पर ध्यान देने की अनुशंसा की जाती है।

यह अध्ययन शिक्षा-नीति निर्माताओं, प्रशासकों एवं अभ्यासरत शिक्षकों को एक ठोस साक्ष्य-आधार (Evidence Base) प्रदान करता है जिससे वे आवासीय शिक्षा को और अधिक प्रभावी एवं समग्र बना सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कपिल, एच. के. (2015). अनुसंधान विधियां: व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगरा: भार्गव बुक हाउस।
- अस्थाना, विपिन एवं अस्थाना, ब्रज गोपाल (2012). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
- पाण्डेय, के. पी. (2010). शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- सिंह, ए. के. (2017). उच्चतर मनोवैज्ञानिक शोध विधियां. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- Best, J. W., & Kahn, J. V. (2006). Research in education (10th ed.). New Delhi: Prentice Hall of India.
- Cattell, R. B. (1970). The scientific analysis of personality. London: Penguin Books.
- Garrett, H. E. (2005). Statistics in psychology and education. New Delhi: Paragon International Publishers.
- Mehdi, B. (1973). Manual of verbal and non-verbal creativity tests. Agra: National Psychological Corporation.
- Singh, R., et al. (2018). Personality development in residential school students: A comparative study. Journal of Educational Research, 12(3), 45–58.
- Jha, S. (2021). Academic achievement and residential schooling: Evidence from tribal districts of Madhya Pradesh. Indian Educational Review, 59(2), 78–91.
- मध्य प्रदेश शासन, स्कूल शिक्षा विभाग: वार्षिक प्रशासनिक प्रतिवेदन (डिण्डौरी जिले के विशेष संदर्भ में)।
- National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2005). National curriculum framework 2005. New Delhi: NCERT.
- Ministry of Tribal Affairs, Government of India. Reports on Eklavya Model Residential Schools (EMRS). New Delhi: MoTA.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****